महाकवि श्री जिन वल्लभसूरि विरचित

019524

श्री संघपट्टक.

टीका सहित गुजराती भाषान्तर.

प्रकाशक, एक जैन.

नवांगी वृत्तिकार श्री अभयदेवसूरिना शिष्य
महाकवि श्री जिनवल्लभसूरि विरचित

संघपट्टक

नामनो

चाळीश काव्यनो अत्युत्तम शिक्षामय ग्रंथ.

षष्ठिशतकग्रंथना कर्त्ता श्रीनेमिचंद्रभांडागारिकना गुरु महानैयायिक श्रीजिनपत्तिसूरिए रचेली त्रण हजार श्लोक प्रमाणनी

बृहत् टीका.

जेमां

चैत्यवासिओना शिथिलाचारनुं पूरेपूरुं खंडन करीने विधिमार्गनी, युक्तिपूर्वक संपूर्ण पुष्टि करेली छे.

आ बन्ने ग्रंथोना मूळपाठ तथा तेनी साथे तेनुं

गुजराती-भाषांतर

छपावी प्रसिद्धकर्त्ता
श्रावक जेठालाल दलसुख.

अमदावाद-श्री जैन प्रिंटिंग प्रेस.

वि. सं. १९६३-सने १९०७.

कीमत रु. ३-८-० पोष्टेज जुदुं.